डॉ. मनमोहन कुमार गोयल
निदेशक
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
जलविज्ञान भवन
रुड़की – 247667 (उत्तराखण्ड)

निदेशक की कलम से .....

आपको यह अवगत कराते हुए मुझे अपार हर्ष और गौरव का अनुभव हो रहा है कि राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की, हिंदी दिवस–2024 के शुभ अवसर पर अपनी वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका ''प्रवाहिनी'' के 31वें अंक का प्रकाशन कर रहा है। हमारे लिए यह सुखद अनुभूति का विषय है कि हमारे देश में कई समृद्ध भाषाएं प्रचलन में हैं तथापि हिंदी ने समूचे राष्ट्र को मजबूती प्रदान करने में एक अहम भूमिका निभाई है, यह हमारी संस्कृति की संवाहिका होने के साथ–साथ राष्ट्रीय एकता की भाषा और जन–जन की भाषा तथा देश की संपर्क भाषा भी है। हिंदी ने देश के भिन्न–भिन्न भाषा–भाषियों को निकट लाने का काम किया है। हिंदी के प्रचार–प्रसार और उन्नयन की दिशा में सरकार की ओर से हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं। हमें भी आपसी सौहार्द और सद्भावना से हिंदी के प्रयोग को समुचित बढ़ावा देना है। हिंदी के प्रयोग से हमारी सामाजिक और राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ होगी और इससे हमारे देश की भावनात्मक एकता भी प्रगाढ़ होगी। हिंदी एक ऐसी कड़ी तथा एक ऐसी भाषा है जो देश के जन–जन को एक सूत्र में बाँध सकती है। किसी भी समाज, राष्ट्र और सभ्यता की पहचान उसकी भाषा से होती है। हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार करने के संवैधानिक उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए संस्थान स्तर पर यह नितांत आवश्यक है कि संस्थान के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिन्दी में कार्य करने की इच्छा शक्ति स्वतः जागृत हो तथा वे अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिन्दी में करने के लिए प्रेरित हों।

मुझे यह कहते हुए अपार प्रसन्नता हो रही है कि हमारे संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा राजभाषा नीति के शत–प्रतिशत अनुपालन के क्रम में अपना अधिकांश कार्य हिन्दी में किया जा रहा है। संस्थान द्वारा वार्षिक हिंदी पत्रिका प्रवाहिनी के अतिरिक्त एक अन्य अर्धवार्षिक तकनीकी पत्रिका ''जल चेतना'' का भी विगत चौदह वर्षों से हिंदी में निरंतर प्रकाशन किया जा रहा है। हमारा प्रयास है कि राजभाषा नीति के प्रचार–प्रसार के लिए संस्थान में दैनिक कार्यों के अतिरिक्त हिन्दी पत्रिकाओं के प्रकाशन, हिन्दी कार्यशालाओं, संगोष्ठियों एवं जन जागरूकता कार्यक्रमों का हिंदी भाषा में नियमित रूप से आयोजन किया जाए।

प्रस्तुत पत्रिका में संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा हिन्दी साहित्य, मनोरंजन एवं तकनीकी विषयों पर अपनी रचनाएं प्रस्तुत की गई हैं। इसके अतिरिक्त समाज के प्रबुद्ध लेखकवर्ग से भी पत्रिका में प्रकाशन हेतु लेख आमंत्रित किए गए हैं जिन्हें पत्रिका में समुचित स्थान प्रदान किया गया है। हिन्दी पत्रिका के प्रकाशन से शासकीय कायों के निष्पादन हेतु हिन्दी का एक अनुकूल वातावरण तैयार होता है और लेखकों को प्रोत्साहन प्राप्त होता है।

इस पत्रिका के सम्पादन एवं प्रकाशन से जुड़े समस्त पदाधिकारी तथा विद्वत लेखकगण पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई के पात्र हैं। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि प्रवाहिनी का प्रस्तुत अंक प्रबुद्ध पाठकों को अत्यंत उपयोगी, रोचक एवं ज्ञानवर्धक लगेगा। मैं पत्रिका की अपार सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(मनमोहन कुमार गोयल)